ईश्वर की कहानियाँ

विष्णु नागर

ईश्वर एक दिन सड़क पर जा रहे थे कि एक बच्चा उनके पास आया। “अंकलजी, क्या आप ईश्वर हैं?”

ईश्वर हतप्रभ थे। वे बोले, “हाँ बेटा, मैं ईश्वर हूँ। बोलो। वैसे तुमने मुझे पहचाना कैसे? मैं तो सालभर से यहीं हूँ। आज तक तो मुझे किसी ने पहचाना नहीं!”

बच्चे ने कहा, “मैंने तो वैसे ही पूछ लिया था। लेकिन इतना जानता हूँ कि ईश्वर ने मेरे साथ बेइन्साफी की है। उसने मेरे माँ-बाप, दोनों छीने हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि ईश्वर ने ऐसा क्यों किया।”

“इसका कोई तर्क तो नहीं है, बेटा। चलो, मैं तुम्हें एक सुन्दर-सी बॉल देता हूँ।”

“बॉल-वॉल मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे बताओ कि मेरे साथ ऐसा क्यों किया?”

“अच्छा, सोने की दो मोहरें ले लो। इससे तुम्हारी ज़िन्दगी आसान हो जाएगी।”

“मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे अपने माँ-बाप ही चाहिए।”

“बेटा, मरे हुए लोग वापिस नहीं आया करते। यही दुनिया का दस्तूर है।”

“अगर वे वापस नहीं आ सकते तो तुमने उन्हें छीना ही क्यों? बताओ?”

बच्चा क्रोध में था और अपने नन्हे-नन्हे हाथों से ईश्वर को मार रहा था, काट रहा था। उनके कपड़े खींच रहा था। उन पर लातें चला रहा था।

दूर से कुछ लोग यह दृश्य देख रहे थे। उन्होंने जब मामले को ज़्यादा बिगड़ते देखा, तो वे पास आए। उन्होंने बच्चे को छुड़ाने की कोशिश की, तो वह और ज़ोर-से चीखा, "यह ईश्वर है। इसने मेरे माँ-बाप छीन लिए हैं। कहता है, 'वापिस नहीं दूँगा'। इसे मैं पीटूँगा और मारूँगा। छोड़ दो मुझे।"

अन्त में ईश्वर को अपनी जान छुड़ाने के लिए कहना पड़ा, "यह बच्चा मुझे ईश्वर समझ बैठा है। इसे आप समझाइए।"

"जाइए-जाइए, भाई साहब। आराम-से जाइए। माँ-बाप के मरने के बाद इस बच्चे ने पहली बार ऐसी हरकत की है। हम इसे समझा लेंगे।"

इस घटना के बाद से ईश्वर बच्चों से डर गए। वे सबको दिखाई देते लेकिन बच्चों को नहीं।

विष्णु नागर: बचपन और छात्र जीवन शाजापुर, मध्य प्रदेश में बीता। सन् 1971 से दिल्ली में स्वतंत्र पत्रकारिता। *नवभारत टाइम्स* तथा *दैनिक हिंदुस्तान, कादंबिनी, नई दुनिया* और *शुक्रवार समाचार* साप्ताहिक से जुड़े रहे। भारतीय प्रेस परिषद के पूर्व सदस्य एवं महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा की कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य। वर्तमान में स्वतंत्र लेखन।

सभी चित्र: कैरन हैडॉक: शोधकर्ता, शिक्षिका, वैज्ञानिक, अध्यापिका और चित्रकार। उन्होंने अमेरिका में बायोफिज़िक्स में अपनी पीएच.डी. और पोस्टडॉक्टरल अध्ययन पूरा करने के बाद भारत में काम शुरू किया। अपने सभी प्रयासों में, उनका प्रमुख सरोकार समाज के वंचित वर्गों के प्रति रहा है, और वे सामाजिक परिवर्तन के लिए कला और विज्ञान शिक्षा–दोनों का उपयोग करती रही हैं।

यह कहानी हरियाणा राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा तैयार की गई विष्णु नागर की किताब *ईश्वर की कहानियाँ* से साभार।